संस्कृति, समाज और संवेदना

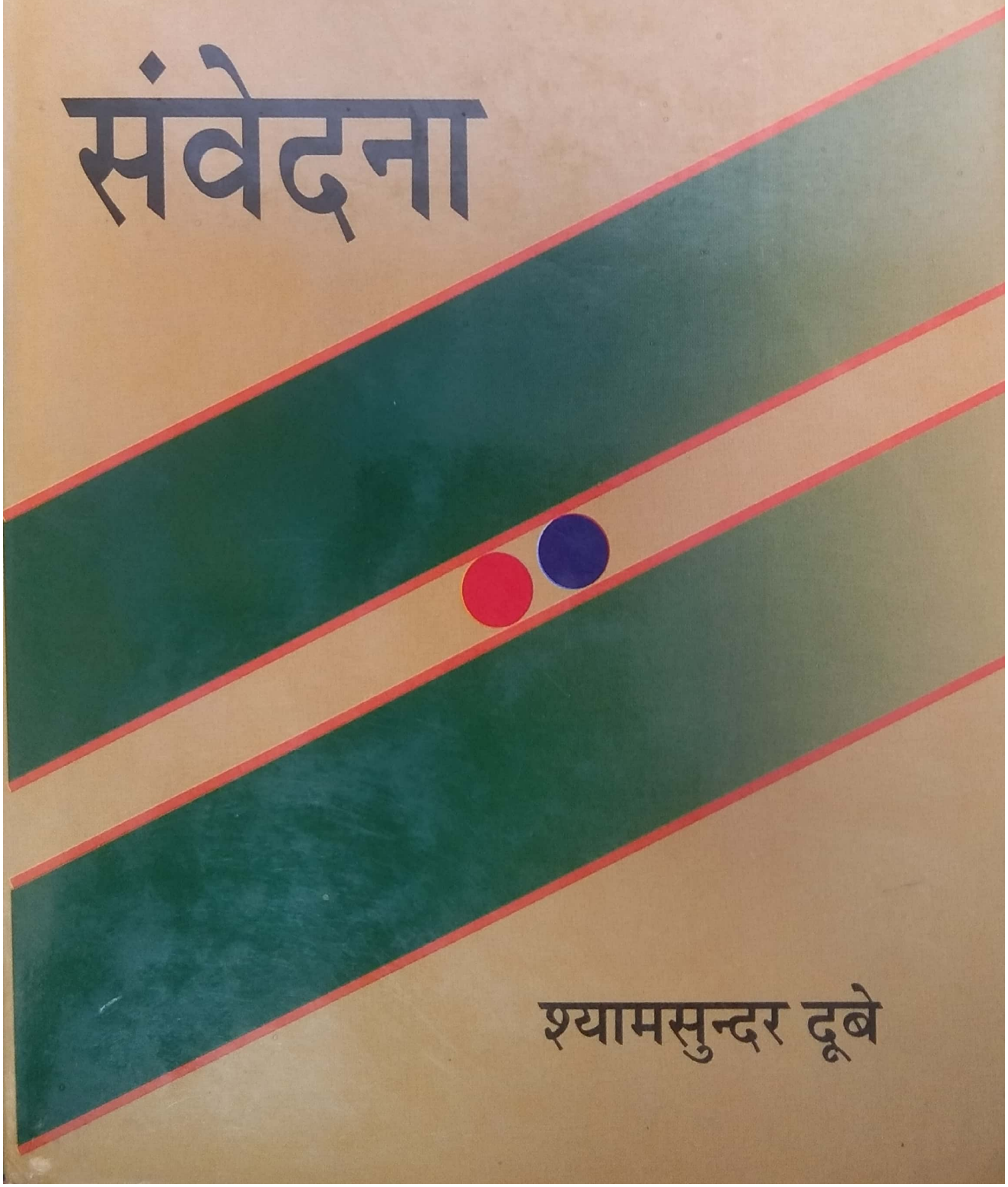

श्यामसुन्दर दूबे

Scanned with OKEN Scanner

संस्कृति, समाज और संवेदना

डॉ. श्यामसुंदर दुबे

ग्रंथलोक
दिल्ली-110032

Scanned with OKEN Scanner

ग्रंथलोक
1/11244 सुभाष पार्क,
(निकट कीर्ति मन्दिर)
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 22827556, मोबाईल : 9868472675

© लेखक

ISBN 81-88567-23-X

मूल्य : 250.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 2004

आवरण : मनीश डागा

शब्द-संयोजक : **विनायक कम्प्यूटर्स,** शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक : **शिवानी आर्ट प्रेस** दिल्ली-110032

SANSKRITI, SAMAAJ AUR SAMVEDNA
by Dr. Shyamsunder Dube **Rs. 250.00**

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

संस्कृति

आँच में तपा एक जीवंत कथानक 13
देशज आधुनिकता के सरोकार 18
नवउपनिवेशवादी मानसिकता की प्रतीति 22
सामाजिक परिवर्तन और प्रगति की प्रक्रिया में परम्परा 27
साहित्य के सामाजिक सरोकार 32
समकालीन संदर्भों में लोक संस्कृति की समन्वयवादिता और उसकी भविष्य दृष्टि 36
लोक साहित्य के मानवीय संदर्भ 42
लोक-संस्कृति की सैद्धान्तिक व्याख्या और इतिहास लेखन 48
क्षेत्र संस्कृति के लोकसंदर्भ 56
बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति के इतिहास की दूसरी परम्परा 62

समाज

समकालीन से संवाद 69
सृजन भी मूल्याँकन भी 72
मानस में तुलसी का अन्तर्द्वन्द्व एवं युग-संघर्ष 75
केशव : लोक और परलोक का समन्वय 79
भूषण का काव्य : इतिहास चेतना का राष्ट्रीय दबाव 85
बिहारी सतसई में चित्रकला 94
पद्माकर की राज्य विषयक अवधारणाएँ 103

संवेदना

यथार्थ की सीमाएँ और हिन्दी–उपन्यास–साहित्य 113
'गोदान' में प्रेमचन्द की इतिहास दृष्टि 119

Scanned with OKEN Scanner

व्यंग्य की धार पर बुन्देलखण्ड 124
अपना मोर्चा : मुहुर्मुहुः 129
हीरा परा बजार में 137
सम्पूर्णता की तलाश में 140
जातीय स्मृतियों का आस्वादन 144
मध्य प्रदेश का कथा साहित्य 148
व्यंग्य का परिप्रेक्ष्य 154
बीसवीं सदी का हिन्दी ललित निबंध 159
नवगीत : बिम्ब और प्रतीक-विधान 173
वर्तमान कविता : संतुलन के बिंदु 184
साठोत्तरी प्रवृत्तियों से प्रवाहमान नवें दशक की कविता 189
भोलेपन से कविता के पास दसों दिशाओं में 194
नारी सम्वेदना का करुण अनुभव सत्य 198
मानवीय रिश्तों और घरेलू गन्ध की कविताएं 201
स्मृति-क्षणों की जीवित-जागृत कविता-भाषा 203
हादसों में फंसी कविता 205
'कनुप्रिया' की राधा 208
पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की साहित्यिक मान्यताएं 215
बाबू गुलाब रायः सृजनात्मक समीक्षा के प्रस्थान बिन्दु 223

Scanned with OKEN Scanner

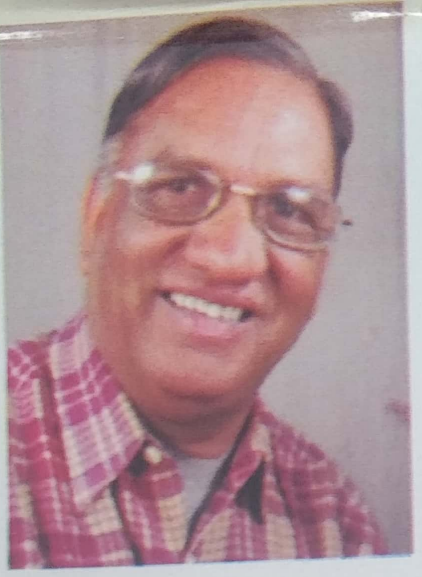

कवि, ललित निबन्धकार, कथाकार आलोचक श्यामसुन्दर दुबे 1944 में मध्यप्रदेश (दमोह) के बर्तलाई ग्राम में जनमे। सागर विश्वविद्यालय से एम.ए. हिन्दी साहित्य से। उसके बाद वहीं से पी-एच.डी. की उपाधि। तत्पश्चात् उच्च शिक्षा में प्राध्यापक रहते हुए वर्तमान में प्राचार्य के पद पर आसीन।

बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन (समीक्षा) 1979, कालमृगया (ललित निबन्ध) 1980, दाखिल खारिज (उपन्यास) 1991, जड़ों की ओर (कहानी संग्रह) 1992, बुन्देलखण्ड की लोक कथाएँ (लोक-साहित्य) 1992, मरे न माहुर खाय (उपन्यास) 1995, रीते खेत में बिजूका (नवगीत संग्रह) 1997, विषाद बाँसुरी की टेर (ललित निबन्ध संग्रह) 1997, बिहारी सतसई-काव्य और चित्रकला का अन्तर्सम्बन्ध (समीक्षा) 1998, इतने करीब से देखो (नवगीत संग्रह) 2000, हमारा राजा हँसता क्यों नहीं (व्यंग्य संग्रह) 2002, लोक : पहचान, परम्परा और प्रवाह (लोक साहित्य) 2003।

इनके साथ ही सार्थक–1. डॉ. लक्ष्मी प्रसाद मिस्त्री 'रमा' स्वरूप और संवेदना, संचयन भाग-2 एवं विभिन्न पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

श्यामसुन्दर दुबे को उनके रचनाकर्म पर अनेक सम्मानों तथा पुरस्कारों से विभूषित किया गया है। दाखिल-खारिज (उपन्यास) को मध्यप्रदेश हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का प्रतिष्ठित 'वागीश्वरी पुरस्कार' विषाद बाँसुरी की टेर (ललित निबन्ध) को बुन्देलखण्ड-साहित्य अकादमी का 'स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती हिन्दी पुरस्कार' रीते खेत में बिजूका (नवगीत संग्रह) को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् का 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं डॉ. शंभुनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार तथा म.प्र. लेखक संघ का पुष्कर सम्मान प्राप्त।

Scanned with OKEN Scanner

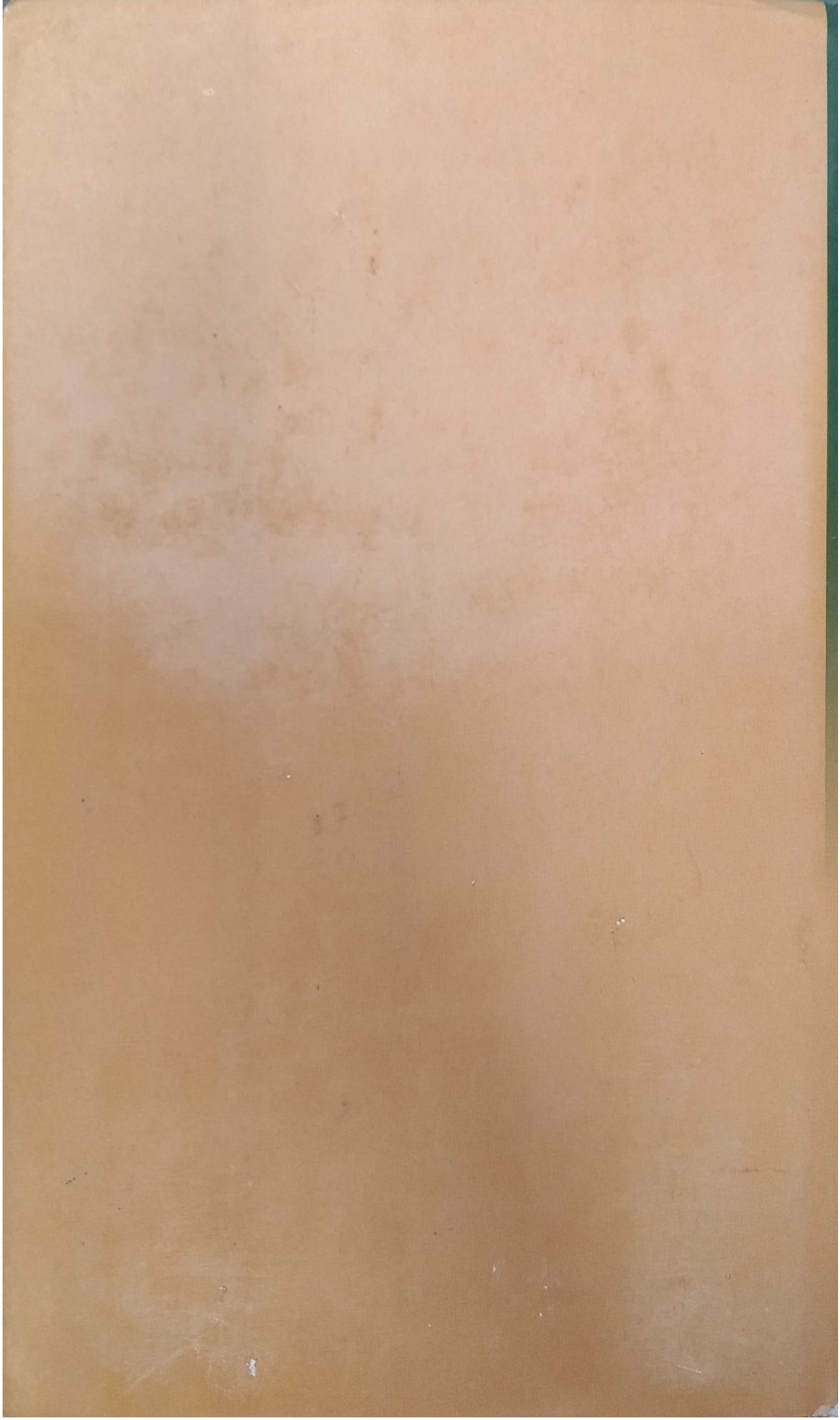

Scanned with OKEN Scanner